६. मनोरंजन के माध्यम और इतिहास

६.१ मनोरंजन की आवश्यकता
६.२ लोकनाट्य
६.३ मराठी रंगमंच
६.४ भारतीय फिल्म जगत
६.५ मनोरंजन क्षेत्र में व्यवसाय के अवसर

मन को बहलाने वाली बातें अर्थात मनोरंजन के साधन । मनोरंजन में अलग-अलग शौक-रुचियाँ, खेल, नाटक-फिल्म आदि मनोरंजन के साधन, लिखना-पढ़ना जैसी आदतों आदि का अंतर्भाव होता है ।

६.१ मनोरंजन की आवश्यकता

व्यक्ति की स्वस्थ वृद्धि और विकास के लिए विशुद्ध और उत्तम श्रेणी का मनोरंजन बहुत महत्त्वपूर्ण होता है । एक ही ढर्रे पर जीवन जीते-जीते जो ऊब और उकताहट पैदा होती है; मनोरंजन उसे दूर कर मन में चेतना, ताजगी तथा शरीर में शक्ति और स्फूर्ति का निर्माण करता है । अपनी रुचि/शौक अथवा खेलों में वृद्धि करने से व्यक्तित्व का विकास होता है । भारत में प्राचीन और मध्ययुग में उत्सव-पर्व, तीज-त्योहार, खेल, नाच-गाना आदि मनोरंजन के साधन थे ।

वर्तमान समय में मनोरंजन के अनेक साधन उपलब्ध हैं ।

सूची बनाएँगे-

मनोरंजन के विविध प्रकार बताकर उनका वर्गीकरण कीजिए ।

मनोरंजन का वर्गीकरण दो प्रकारों में किया जा सकता है । कृतियुक्त और कृतिमुक्त । कृतियुक्त मनोरंजन से तात्पर्य किसी कृति अथवा कार्य में उस व्यक्ति का प्रत्यक्ष शारीरिक-मानसिक सहभाग रहता है । हस्तव्यवसाय, खेल ये कृतियुक्त मनोरंजन के उदाहरण हैं ।

जब हम किसी खेल का मैच देखते हैं, संगीत सुनते हैं, फिल्म देखते हैं तब ये कृतियाँ कृतिमुक्त स्तर पर रहती हैं । इन कृतियों में हम मात्र दर्शक होते हैं ।

करके देखें-

इतिहास विषय से संबंधित कृतियुक्त और कृतिमुक्त मनोरंजन की सारिणी तैयार कीजिए ।

६.२ लोकनाट्य

कठपुतलियों का खेल : मोहेंजोदड़ो, हड़प्पा, ग्रीक (यूनान) और इजिप्त में हुए उत्खनन में मिट्टी की पुतलियों, मूर्तियों के अवशेष पाए गए हैं । उनका

कठपुतलियों का खेल

कठपुतलियों की तरह उपयोग किए जाने की संभावना है । इसके आधार पर यह ध्यान में आता है कि यह खेल प्राचीन है । इस खेल का पंचतंत्र और महाभारत में उल्लेख मिलता है ।

प्राचीन भारत में ये कठपुतलियाँ बनाने के लिए लकड़ी, ऊन, चमड़ा, सींगों और हाथी के दाँतों का उपयोग किया जाता था । इस खेल की दो पद्धतियाँ -राजस्थानी और दक्षिणी हैं ।

उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, असम, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक और केरल राज्यों में कठपुतली का खेल दिखाने वाले कलाकार हैं । कठपुतली का खेल प्रभावपूर्ण बनाने के लिए सूत्रधार के बोलने का कौशल अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है । इसमें छोटा रंगमंच, प्रकाश व्यवस्था और ध्वनि का सटीक और सूचक उपयोग करते हैं । इसके छाया-कठपुतली, हथ-कठपुतली, काष्ठ-कठपुतली और सूत्र-कठपुतली प्रकार हैं ।

दशावतारी नाटक : दशावतारी नाटक महाराष्ट्र के लोकनाट्य का एक भेद है । फसल कटने के बाद कोंकण और गोआ में दशावतारी नाटकों को खेला जाता है। दशावतारी नाटक मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और कल्की इन दस अवतारों पर आधारित होते हैं । सबसे पहले नाटक का सूत्रधार विघ्नहर्ता गणेश जी का आवाहन करता है ।

दशावतारी नाटक के पात्रों का अभिनय, रंगभूषा, वेशभूषा पारंपरिक होती है । नाटक का अधिकांश हिस्सा काव्यात्मक होता है । कुछ संवाद पात्र स्वयं अपनी ओर से बोलते हैं । देवताओं के लिए लकड़ी के मुखौटे उपयोग में लाते हैं । नाटक की समाप्ति हांडी फोड़कर दही तथा अन्य सामग्री बाँटकर और आरती उतारकर होती है ।

दशावतारी नाटक

१८ वीं शताब्दी में श्याम जी नाईक काले ने दशावतारी नाटक दिखाने वाली एक मंडली स्थापित की थी । उस मंडली को लेकर वे पूरे महाराष्ट्र में घूमते थे ।

विष्णुदास भावे ने दशावतारी नाट्य तकनीक को संस्कारित करके अपने पौराणिक नाटक प्रस्तुत किए। फलस्वरूप मराठी नाटक की पूर्वपीठिका दशावतारी नाटकों तक पहुँचती है ।

भजन : करताल, मृदंग अथवा पखावज आदि वाद्यों के साथ ईश्वर के गुणों का वर्णन और नाम स्मरण के रूप में पद्य रचनाओं का गायन करना भजन कहलाता है । भजन के दो प्रकार - चक्री भजन और सोंगी (स्वांग भरना) भजन हैं ।

चक्री भजन : बिना रुके चक्राकार रूप में घूमते हुए भजन गाना ।

सोंगी (स्वांग भरते हुए) भजन : देवभक्तों की भूमिका निभाते हुए संवाद रूप में भजन गाना ।

वर्तमान समय में संत तुकड़ोजी महाराज ने 'खंजिरी (खंजड़ी) भजन' को बहुत लोकप्रिय बनाया ।

उत्तर भारत में संत तुलसीदास, महाकवि सूरदास, संत मीराबाई और संत कबीर के भजन प्रसिद्ध हैं ।

करके देखें-

संत तुलसीदास, संत सूरदास, संत मीराबाई और संत कबीर के भजन सुनिए और उन्हें संगीत शिक्षकों अथवा जानकारों की सहायता से समझ लीजिए ।

कर्नाटक में पुरंदरदास, कनकदास, विजयदास, बोधेंद्रगुरु स्वामी, त्यागराज आदि की रचनाओं को भजन स्वरूप में गाया जाता है ।

गुजरात में संत नरसी मेहता ने भक्ति संप्रदाय को प्रोत्साहन दिया । महाराष्ट्र में संत नामदेव ने वारकरी पंथ के माध्यम से भजन-कीर्तन को प्रेरित किया । वारकरी संप्रदाय ने नाम स्मरण के रूप में भजन को महनीय बना दिया ।

कीर्तन : परंपरा के अनुसार ऐसा माना जाता है कि कीर्तन परंपरा के आदि प्रवर्तक नारदमुनि थे । संत नामदेव महाराष्ट्र के आदि कीर्तनकार माने जाते हैं । उनके बाद अन्य संतों ने इस परंपरा का प्रसार किया ।

कीर्तनकार को हरिदास अथवा कथेकरीबुवा

(कथावाचक) कहते हैं । कीर्तनकार को वेशभूषा, विद्वत्ता, वक्तृत्व, गायन, वादन, नृत्य, चुटकुलेबाजी का ध्यान रखना पड़ता है । उसके स्वभाव में बहु-श्रुतता का गुण होना आवश्यक होता है । कीर्तन मंदिर में अथवा मंदिर के परिसर में किया जाता है ।

मालूम कर लें

कीर्तन की नारदीय अथवा हरिदासी और वारकरी ये दो मुख्य परंपराएँ हैं । हरिदासी कीर्तन एकपात्रीय नाट्य प्रस्तुति जैसा होता है । इस कीर्तन में 'पूर्वरंग' और 'उत्तररंग' ये दो हिस्से होते हैं । नमन, निरूपण का अभंग (पद) और उसके निरूपण को पूर्वरंग कहते हैं और उसके दृष्टांत अथवा उदाहरण के रूप में जो कोई आख्यान अथवा कहानी बताई जाती है; उसे उत्तररंग कहते हैं । वारकरी कीर्तन में सामूहिकता पर बल दिया जाता है । कीर्तनकारों के साथ करतालियों/झाँझियों का सहभाग भी महत्त्वपूर्ण होता है । स्वतंत्रता आंदोलन के समय में राष्ट्रीय कीर्तन के नाम से एक प्रकार उदित हुआ । यह कीर्तन नारदीय कीर्तन की तरह ही प्रस्तुत किया जाता है । इसमें स्वतंत्रता आंदोलन में सम्मिलित नेताओं, वैज्ञानिकों, समाज सुधारकों जैसे महान व्यक्तियों के चरित्रों के आधार पर सामाजिक पुनर्जागरण किए जाने पर बल दिया जाता है । इसका प्रारंभ वाई के दत्तोपंत पटवर्धन ने किया ।

इसके अतिरिक्त महात्मा जोतीराव फुले द्वारा संचालित सत्यशोधक समाज ने भी कीर्तन द्वारा सामाजिक जागृति का कार्य किया । संत गाडगे महाराज के कीर्तन सत्यशोधकवालों के कीर्तन से मेल रखते थे । वे अपने कीर्तनों द्वारा जातिभेद निर्मूलन, स्वच्छता, नशीले पदार्थों से मुक्ति जैसे विषयों पर जनजागरण का कार्य करते थे ।

ललित (लळित) : महाराष्ट्र में प्रचलित मनोरंजन का एक पुराना प्रकार ललित (लळित) है । इस प्रकार का समावेश नारदीय कीर्तन परंपरा में होता है । इसका कोंकण और गोआ में बहुत महत्त्व है ।

ललित (लळित) की प्रस्तुति में धार्मिक पर्व के अवसर पर उत्सवदेवी सिंहासन विराजमान हैं; ऐसा मानकर उसकी प्रार्थना की जाती है । ***'ज्याला जे हवे असेल त्याला ते मिळो । सगळा गाव आनंदाने पुढच्या लळितापर्यंत नांदो । आपापसांतले कलह लळितात मिटोत । कोणाच्याही मनात किल्मिष न उरो । निकोप मनाने व्यवहार चालोत । सदाचरणाने समाज वागो ।'*** प्रार्थना का स्वरूप इस प्रकार का होता है ।

ललित (लळित) को नाट्य प्रवेश की तरह प्रस्तुत किया जाता है । इसमें कृष्ण और रामकथा तथा भक्तों की कथाएँ बताई जाती हैं । कुछ ललित (लळित) हिंदी भाषा में भी हैं । आधुनिक मराठी रंगमंच को ललित (लळित) की पृष्ठभूमि प्राप्त है ।

भारुड़ : आध्यात्मिक और नैतिक सीख देने वाले मराठी के रूपकात्मक गीतों को भारुड़ कहते हैं । भारुड़ पथनाट्य (नुक्कड़ नाटक) की तरह प्रयोगशील होता है । महाराष्ट्र में संत एकनाथ के भारुड़ विविधता, नाट्यमयता, मनोविनोद और गेयता जैसे तत्त्वों के कारण लोकप्रिय हो गए । भारुडों को रचने के पीछे संत एकनाथ का उद्देश्य लोकशिक्षा था ।

तमाशा : 'तमाशा' शब्द मूलतः फारसी (पर्शियन) भाषा का शब्द है । इसका अर्थ मन अथवा चित्त को प्रसन्नता प्रदान करने वाला दृश्य होता है । विभिन्न लोककलाओं और अभिजात कलाओं की धाराओं को अपने में समेटकर अठारहवीं शताब्दी तक तमाशा विकसित हुआ । पारंपरिक तमाशा के दो प्रकार हैं-संगीत बारी और ढोलकी मंडली । संगीत बारी में नाट्य की अपेक्षा नृत्य और संगीत पर अधिक बल दिया जाता है । तमाशा में प्रमुखतः नृत्य-संगीत को स्थान था परंतु कालांतर में 'वग' इस नाट्यरूप अर्थात नाटक का समावेश किया गया । यह वग अर्थात नाटक उत्स्फूर्त हास-परिहास और चुटकुलेबाजी के आधार पर क्रमशः रोचक बनता जाता है । तमाशा के आरंभ में 'गण' अर्थात गणेश वंदना की जाती है । इसके पश्चात 'गवळण' (भगवान श्रीकृष्ण और राधा-गोपियों के बीच की छेड़छाड़ और क्रीड़ाएँ) प्रस्तुत की जाती हैं । तमाशा के दूसरे भाग में 'वग' अर्थात मुख्य

नाटक प्रस्तुत किया जाता है । मराठी रंगमंच पर 'विच्छा माझी पुरी करा' और 'गाढवाचे लग्न' नाटकों ने बड़ी धूम मचाई । ये दोनों नाटक तमाशा के बदले हुए आधुनिक स्वरूप को दर्शाते हैं ।

पोवाड़ा (कड़खा अथवा वीरगान) : यह गद्य-पद्य मिश्रित काव्य प्रस्तुति का प्रकार है । पोवाड़ा में वीर स्त्री-पुरुषों की वीरता और पराक्रम का आवेशयुक्त और स्फूर्तिदायी भाषा में कथन किया जाता है । छत्रपति शिवाजी महाराज के समय के अज्ञानदास कवि द्वारा रचित अफजल खान वध से संबंधित पोवाड़ा और तुलसीदास द्वारा रचित सिंहगढ़ युद्ध का पोवाड़ा प्रसिद्ध हैं ।

अंग्रजों के शासनकाल में उमाजी नाईक, चाफेकर बंधु, महात्मा गांधी पर पोवाड़े रचे गए । संयुक्त महाराष्ट्र के आंदोलन में अमर शेख, अण्णाभाऊ साठे और गवाणकर जैसे शाहिरों (वीरगान लिखने एवं गाने वाले) द्वारा रचित पोवाड़ों ने महाराष्ट्र में धूम मचाई और पोवाड़ों के माध्यम से जागृति पैदा की गई ।

६.३ मराठी रंगमंच

रंगमंच : व्यक्ति अथवा समूह द्वारा ललित कला को जहाँ प्रस्तुत किया जाता है; उस स्थान को रंगमंच अथवा रंगभूमि कहते हैं । ललित कला में कलाकार और दर्शक; इन दोनों का सहभाग आवश्यक रहता है। नाट्यकथा, नाट्निर्देशक, कलाकार, रंगभूषा, वेशभूषा, रंगमंच, नेपथ्य, प्रकाश योजना, नाटक का दर्शक और समीक्षक जैसे अनेक घटक रंगमंच से जुड़े रहते हैं । नाटक में नृत्य और संगीत का भी समावेश रह सकता है । प्रायः नाटक संवादों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है परंतु कुछ नाटकों में मूक अभिनय भी होता है। इसे मूकनाट्य कहा जाता है ।

छत्रपति शिवाजी महाराज, छत्रपति संभाजी महाराज, महात्मा जोतीराव फुले, लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर के जीवन पर आधारित नाटकों की जानकारी प्राप्त कीजिए ।

तंजौर के भोसले राजवंश ने मराठी और दक्षिणी भाषाओं के नाटकों को प्रोत्साहन दिया । इस राजवंश के राजाओं ने स्वयं नाटक लिखे तथा संस्कृत नाटकों का अनुवाद किया ।

महाराष्ट्र के रंगमंच के विकास में १९ वीं शताब्दी का महत्त्वपूर्ण स्थान है । विष्णुदास भावे मराठी रंगमंच के जनक के रूप में जाने जाते हैं । उनके द्वारा रंगमंच पर लाया गया 'सीता स्वयंवर' प्रथम नाटक है । विष्णुदास भावे के लिखे नाटकों के पश्चात महाराष्ट्र में ऐतिहासिक, पौराणिक नाटकों के साथ-साथ हल्के-फुल्के और प्रहसन स्वरूप के नाटक भी रंगमंच पर आए । इसमें रंजक और विनोदपूर्ण पद्धति से सामाजिक विषय प्रस्तुत किए जाते थे ।

प्रारंभ में नाटकों की संहिता लिखित स्वरूप हुआ नहीं करती थी । कई बार उनमें गीत लिखे होते थे परंतु गद्य संवाद स्वयंस्फूर्ति से बोले जाते थे । १८६१ ई. में वि.ज.कीर्तने द्वारा लिखा 'थोरले माधवराव पेशवे' (ज्येष्ठ माधवराव पेशवा) वह प्रथम नाटक है; जिसकी संहिता मुद्रित स्वरूप में उपलब्ध हुई थी । इस नाटक के कारण संपूर्ण लिखित संहितावाले नाटकों की परंपरा प्रारंभ हुई ।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में उत्तर हिंदुस्तान के ख्याल संगीत को महाराष्ट्र में रचाने-बसाने का कार्य बालकृष्णबुवा इचलकरंजीकर ने किया । उनके बाद उस्ताद अल्लादिया खाँ, उस्ताद अब्दुल करीम खाँ और उस्ताद रहमत खाँ ने महाराष्ट्र के रसिकों में संगीत के प्रति रुचि उत्पन्न की । इसका परिणाम यह हुआ कि संगीत रंगमंच का उदय हुआ । किर्लोस्कर मंडली नाटक कंपनी के संगीत नाटक लोकप्रिय हुए। उनमें अण्णासाहेब किर्लोस्कर के लिखे 'संगीत शाकुंतल' नाटक ने बहुत धूम मचाई । संगीत नाटकों में गोविंद बल्लाल देवल का लिखा 'संगीत शारदा' नाटक बहुत महत्त्वपूर्ण माना जाता है । नाटक में जरठ-कुमारी (वृद्ध का कुँआरी लड़की से विवाह) विवाह जैसी तत्कालीन अनिष्ट परंपरा पर हास्य-व्यंग्यात्मक रूप में परंतु पैनी आलोचना की थी। इसके अतिरिक्त श्रीपाद कृष्ण कोल्हटकर

का 'मूकनायक', कृष्णाजी प्रभाकर खाडिलकर का लिखा 'संगीत मानापमान', राम गणेश गडकरी का लिखा 'एकच प्याला' (एक ही जाम) नाटक रंगमंच के इतिहास में महत्त्वपूर्ण हैं ।

क्या, आप जानते हैं ?

महाभारत महाकाव्य की घटना को लेकर खाडिलकर ने 'कीचकवध' नाटक लिखा । इसमें उन्होंने अंग्रेजों के साम्राज्यवाद की प्रतीकात्मक आलोचना की थी । कीचकवध की द्रौपदी से तात्पर्य अबला भारतमाता थीं । युधिष्ठिर से तात्पर्य नरम दल, भीम से तात्पर्य गरम दल और कीचक अर्थात सत्तांध वाइसराय लॉर्ड कर्जन था । इस प्रकार रूपक खड़ा किया गया था और दर्शक इस नाटक को इसी रूपक में देखते थे । परिणामस्वरूप उनके मन में अंग्रेजी साम्राज्यवाद के प्रति आक्रोश उत्पन्न होता था ।

मराठी रंगमंच की गिरती अवस्था में आचार्य अत्रे के 'साष्टांग नमस्कार', 'उद्याचा संसार' (कल का घर संसार), 'घराबाहेर' (घर के बाहर) जैसे लोकप्रिय नाटकों ने रंगमंच को सँभालने-सँवारने में सहायता की । वर्तमान समय में वसंत कानेटकर के लिखे 'रायगडाला जेव्हा जाग येते', 'इथे ओशाळला मृत्यू', विजय तेंडुलकर का लिखा 'घाशीराम कोतवाल', विश्राम बेडेकर का लिखा 'टिळक आणि आगरकर' आदि नए ढंग के नाटक प्रसिद्ध हैं ।

विविध विषयों पर लिखे गए नाटकों तथा नाट्य प्रकारों में हुए आविष्कारों के कारण मराठी रंगमंच समृद्ध हुआ । नाट्य कलाकार के रूप में मुख्य रूप से गणपतराव जोशी, बालगंधर्व अर्थात नारायणराव राजहंस, केशवराव भोसले, चिंतामणराव कोल्हटकर, गणपतराव बोडस आदि के नाम लिये जा सकते हैं । उनके मराठी नाटक खुले मैदान में खेले जाते थे । अंग्रेजों ने सब से पहले मुंबई में 'प्ले हाउस', 'रिपन', 'विक्टोरिया' नाट्यगृहों का निर्माण करवाया । उसके पश्चात धीरे-धीरे मराठी नाटकों का मंचन बंद नाट्यगृहों में होने लगा ।

क्या, आप जानते हैं ?

विख्यात साहित्यकार वि.वा.शिरवाडकर अर्थात कुसुमाग्रज ने शेक्सपियर के 'किंग लियर' नाटक के आधार पर 'नटसम्राट' नाटक लिखा । यह नाटक बहुत चर्चित रहा । इस नाटक का त्रासदपूर्ण नायक गणपतराव बेलवलकर है । शिरवाडकर ने इस नायक पात्र का निर्माण बहुत पहले ख्यातिप्राप्त रह चुके श्रेष्ठ अभिनेता गणपतराव जोशी और नानासाहेब फाटक के व्यक्तित्वों में निहित अभिनय की रंगछटाओं का मिश्रण कर किया था ।

६.४ भारतीय फिल्म जगत

फिल्म : फिल्म कलात्मकता और तकनीकी विज्ञान का समन्वय साधनेवाला माध्यम है । चलित फिल्मांकन की खोज होने पर फिल्म कला का जन्म हुआ । इसमें से गूँगी फिल्मों का युग प्रारंभ हुआ । कालांतर में ध्वनिमुद्रण (रेकॉर्डिंग) करना संभव हुआ और बोलने वाली फिल्मों का युग आया ।

क्या, आप जानते हैं ?

फिल्मों के प्रकार - हास्य-व्यंग्यात्मक फिल्में, समाचारपर, जागृतिपर फिल्में, ख्यातिपर फिल्में, बालफिल्में, सैनिकीपर फिल्में, शैक्षिक फिल्में, कहानीप्रधान फिल्में आदि ।

भारत में पूरी लंबाई की पहली फिल्म बनाने का और उसे प्रदर्शित करने का श्रेय महाराष्ट्र को प्राप्त है । 'भारतीय फिल्मों की जननी' के रूप में महाराष्ट्र की ख्याति है । भारतीय फिल्मों के विकास में मदनराव माधवराव चितले, कल्याण का पटवर्धन परिवार और हरिश्चंद्र सखाराम भाटवड़ेकर उर्फ सावेदादा का योगदान रहा है ।

आगे चलकर निर्देशक गोपाल रामचंद्र अर्थात दादासाहेब तोरणे और अ.प.करंदीकर, एस.एन. पाटणकर, वी.पी.दिवेकर ने विदेशी तकनीशियनों की

दादासाहेब तोरणे

सहायता से कहानीप्रधान फिल्म 'पुंडलिक' १९१२ ई. में मुंबई में दिखाई । १९१३ ई. में दादासाहेब फालके ने स्वयं निर्देशित और फिल्म निर्माण से संबंधित सभी प्रक्रियाएँ भारत में पूर्ण की हुईं 'राजा हरिश्चंद्र' फिल्म को मुंबई में प्रदर्शित किया । इस फिल्म के बाद उन्होंने मोहिनी-भस्मासुर, सावित्री-सत्यवान ये गूँगी फिल्में बनाईं । साथ ही; वेरुल (एलोरा) की गुफाओं तथा त्र्यंबकेश्वर और नाशिक तीर्थस्थानों पर आधारित जागृतिपर फिल्में बनाईं । यहाँ से ऐतिहासिक और पौराणिक विषयों पर फिल्में बनाने की परंपरा प्रारंभ हुई।

दादासाहेब फालके

कालांतर में भारत में पहला सिने-कैमरा बनाने वाले आनंदराव पेंटर ने फिल्म निर्माण में रुचि दिखाई । उनके मौसेरे भाई बाबूराव पेंटर अर्थात मिस्त्री ने १९१८ ई. में 'सैरंध्री' फिल्म बनाई । उन्होंने पहली ऐतिहासिक गूँगी फिल्म 'सिंहगड' बनाई । इसके पश्चात उन्होंने कल्याणचा खजिना, बाजीप्रभू देशपांडे, नेताजी पालकर जैसी ऐतिहासिक फिल्में बनाईं । इसके अतिरिक्त 'सावकारी पाश' (साहूकारी फंदा) यह पहली यथार्थवादी फिल्म बनाई । १९२५ ई. में भालजी पेंढारकर ने 'बाजीराव-मस्तानी' फिल्म बनाई । भालजी पेंढारकर की ऐतिहासिक फिल्मों द्‌वारा राष्ट्रवादी विचारधारा का प्रसार हो रहा है; यह अंग्रेजों के ध्यान में आने पर अंग्रेजों ने फिल्मों पर प्रतिबंध लगाए ।

कमलाबाई मंगरुलकर मराठी की पहली स्त्री फिल्म निर्माती थी । उन्होंने 'सावळ्या तांडेल' और हिंदी में 'पन्नादाई' ये बोलने वाली फिल्में बनाईं । १९४४ ई. में प्रभात कंपनी की 'रामशास्त्री' फिल्म का बहुत बोलबाला रहा । स्वतंत्रता पश्चात के समय में आचार्य अत्रे ने 'महात्मा फुले' के जीवन पर, विश्राम बेडेकर ने वासुदेव बलवंत फडके के जीवन पर आधारित फिल्में बनाईं । दिनकर द. पाटील ने 'धन्य ते संताजी धनाजी' (धन्य हैं वे संताजी-धनाजी) फिल्म बनाई । प्रभाकर पेंढारकर द्‌वारा निर्मित 'बाल शिवाजी' का अपना अलग महत्त्व है ।

भारतीय फिल्मों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा दिलवाने वाली पहली फिल्म संत तुकाराम है । यह फिल्म पैरिस में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में प्रदर्शित हुई । इस फिल्म में विष्णुपंत पागनीस ने संत तुकाराम की भूमिका निभाई थी ।

चलिए ढूँढ़ेंगे

इस पाठ में जिन फिल्मों का उल्लेख नहीं हुआ है परंतु उनका संबंध इतिहास से है, ऐसी फिल्मों की सूची अंतरजाल की सहायता से तैयार कीजिए ।

जिस प्रकार मराठी भाषा में ऐतिहासिक फिल्में बनाई गईं । वैसे ही हिंदी भाषा में भी अनेक ऐतिहासिक फिल्में बनाई गईं । स्वतंत्रतापूर्व समय में बनाई गईं हिंदी फिल्मों में सिकंदर, तानसेन, सम्राट चंद्रगुप्त, पृथ्वीवल्लभ, मुगल-ए-आजम आदि फिल्में इतिहास पर आधारित थीं । 'डॉ.कोटणीस की अमर कहानी' फिल्म सत्य घटना पर आधारित थी । स्वतंत्रता आंदोलन पर आधारित 'आंदोलन', 'झाँसी की रानी' फिल्में महत्त्वपूर्ण मानी जाती हैं ।

मालूम कर लें

सिनेमागृह में पहले सिनेमा प्रारंभ होने से पूर्व जागृतिपर फिल्म अथवा समाचार फिल्म दिखाई जाती थी । इन फिल्मों के निर्माण हेतु भारत सरकार ने 'फिल्म्स डिवीजन' की स्थापना की थी । इन जागृतिपर और समाचारपर फिल्मों का उपयोग लोगों के सामाजिक पुनर्जागरण हेतु किया जाता था । इस विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए ।

बॉम्बे टॉकिज, फिल्मीस्तान, राजकमल प्रॉडक्शन्स, आर.के.स्टूडियोज, नवकेतन आदि कंपनियों ने फिल्म निर्माण क्षेत्र में ठोस कार्य किया है ।

चलिए, ढूँढ़ेंगे

अंतरजाल की सहायता से १९७० ई. से २०१५ तक की इतिहास विषय से संबंधित मराठी/हिंदी फिल्में ढूँढ़िए ।

६.५ मनोरंजन क्षेत्र में व्यवसाय के अवसर

इतिहास के छात्रों को रंगमंच और फिल्म क्षेत्रों में अनेक अवसर उपलब्ध हैं ।

नाटक : (१) नेपथ्य, वेशभूषा, केशभूषा, रंगभूषा आदि की अचूक जानकारी आवश्यक होती है । इसके लिए ऐतिहासिक कालखंड की चित्रकला, शिल्पकला, स्थापत्य विषयों का सूक्ष्म अध्ययन करने वाले तज्ञ कला निर्देशन का नियोजन कर सकते हैं अथवा इसके लिए परामर्शदाता के रूप में भी काम करते हैं ।

(२) संवाद लेखन की प्रक्रिया में लेखक और उनके परामर्शदाता के रूप में भाषा और संस्कृति के इतिहास के जानकारों की आवश्यकता होती है ।

फिल्म : (१) फिल्म की कहानी से संबंधित समय का वातावरण निर्माण करने का तथा पात्रों की वेशभूषा, केशभूषा, रंगभूषा आदि का नियोजन करने का कार्य कला निर्देशक करता है । इस क्षेत्र में भी इतिहास तज्ञ प्रत्यक्ष कला निर्देशक अथवा कला निर्देशक के परामर्शदाता के रूप में काम कर सकते हैं ।

(२) फिल्म के संवाद लेखन के लिए भाषा और संस्कृति के तज्ञ व्यक्तियों की आवश्यकता होती है ।

स्वाध्याय

१. (अ) दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर कथन पूर्ण कीजिए ।

(१) महाराष्ट्र के आद्य कीर्तनकार के रूप में ..... को माना जाता है ।
(अ) संत ज्ञानेश्वर (ब) संत तुकाराम
(ब) संत नामदेव (क) संत एकनाथ

(२) बाबूराव पेंटर ने ..... फिल्म बनाई ।
(अ) पुंडलिक (ब) राजा हरिश्चंद्र
(क) सैरंध्री (ड) बाजीराव-मस्तानी

(ब) निम्न में से असत्य जोड़ी को पहचानकर लिखिए ।

(१) रायगडाला जेव्हा जाग येते - वसंत कानेटकर
(२) टिळक आणि आगरकर - विश्राम बेडेकर
(३) साष्टांग नमस्कार - आचार्य अत्रे
(४) एकच प्याला - अण्णासाहेब किर्लोस्कर

२. निम्न सारिणी को पूर्ण कीजिए ।

	भजन	कीर्तन	ललित	भारुड़
गुण विशेषताएँ				
उदाहरण				

३. टिप्पणी लिखिए ।

(१) मनोरंजन की आवश्यकता
(२) मराठी रंगमंच
(३) रंगमंच और फिल्म क्षेत्र से संबंधित व्यवसाय के अवसर

४. निम्न कथनों को कारणसहित स्पष्ट कीजिए ।

(१) फिल्म माध्यम में इतिहास विषय महत्त्वपूर्ण है ।
(२) संत एकनाथ के भारुड़ लोकप्रिय हुए ।

५. निम्न प्रश्नों के उत्तर २५ से ३० शब्दों में लिखिए ।

(१) भारतीय फिल्म जगत की जननी के रूप में महाराष्ट्र को ख्याति क्यों प्राप्त है ?
(२) पोवाड़ा किसे कहते हैं, स्पष्ट कीजिए ।

उपक्रम

संत एकनाथ का कोई भी भारुड़ प्राप्त कीजिए और विद्यालय के सांस्कृतिक समारोह में साभिनय प्रस्तुत कीजिए ।

372RE2